

# سُورَةُ الصَّافَّاتِ

Surah 37 — As-Saaffaat (Those drawn up in Ranks) · Meccan · 182 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَالصَّفَّاتِ صَفًّا ۝۱

(इबादत या जिहाद में) पर बाँधने वालों की (क़सम)

2

فَالزُّجُرَّتِ زَجْرًا ۝۲

फिर (बदों को बुराई से) झिड़क कर डाँटने वाले की (क़सम)

3

فَالْتَلَيْتِ زَكَرًا ۝۳

फिर कुरान पढ़ने वालों की क़सम है

4

إِنَّ إِلَهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝۴

तुम्हारा माबूद (यक़ीनी) एक ही है

5

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشْرِقِ ۝۵

जो सारे आसमान ज़मीन का और जो कुछ इन दोनों के दरमियान है (सबका) परवरदिगार है

6

إِنَّا زَيْنَا السَّمَاءِ الدُّنْيَا بِزِينَةِ الْكَوَاكِبِ ۝۶

और (चाँद सूरज तारे के) तुलूज व (गुरुब) के मक़ामात का भी मालिक है हम ही ने नीचे वाले आसमान को तारों की आरइश (जगमगाहट) से आरास्ता किया

7

وَحِفْظًا ۝۷ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ۝۸

और (तारों को) हर सरकश शैतान से हिफ़ाज़त के वास्ते (भी पैदा किया)

8

لَا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْلَى وَيُقَذَّفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۖ

कि अब शैतान आलमे बाला की तरफ़ कान भी नहीं लगा सकते और (जहाँ सुन गुन लेना चाहा तो) हर तरफ़ से खदेड़ने के लिए शहाब फेके जाते हैं

9

دُحُورًا ۚ ا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ ۖ وَاصِبٌ

और उनके लिए पाएदार अज़ाब है

10

إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ ۖ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۖ

मगर जो (शैतान शाज़ व नादिर फरिश्तों की) कोई बात उचक ले भागता है तो आग का दहकता हुआ तीर उसका पीछा करता है

11

فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَنْ خَلَقْنَا ۖ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ ۖ لَّازِبٍ ۖ

तो (ऐ रसूल) तुम उनसे पूछो तो कि उनका पैदा करना ज्यादा दुश्वार है या उन (मज़कूरा) चीज़ों का जिनको हमने पैदा किया हमने तो उन लोगों को लसदार मिट्टी से पैदा किया

12

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ

बल्कि तुम (उन कुफ़ार के इन्कार पर) ताज्जुब करते हो और वह लोग (तुमसे) मसख़रापन करते हैं

13

وَإِذَا ذُكِّرُوا ۖ لَا يَذْكُرُونَ

और जब उन्हें समझाया जाता है तो समझते नहीं हैं

14

وَإِذَا رَأَوْا ۖ ءَايَةً ۖ يَسْتَسْخِرُونَ

और जब किसी मौजिजे को देखते हैं तो (उससे) मसख़रापन करते हैं

15

وَقَالُوا ۖ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ

और कहते हैं कि ये तो बस खुला हुआ जादू है

16

أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۖ وَعِظْمًا ۖ أَعِنَّا لَمَبْعُوثُونَ

भला जब हम मर जाएँगे और खाक और हड्डियाँ रह जाएँगे

17

أَوْءَابَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ

तो क्या हम या हमारे अगले बाप दादा फिर दोबारा कब्रों से उठा खड़े किए जाएँगे

18

قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دُخْرُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि हाँ (ज़रूर उठाए जाओगे)

19

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ ۖ وَحِدَةٌ ۖ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ

और तुम ज़लील होगे और वह (क़यामत) तो एक ललकार होगी फिर तो वह लोग फ़ौरन ही (आँखे फाड़-फाड़ के) देखने लगेंगे

20

وَقَالُوا ۖ يُؤَيَّلْنَا هَذَا يَوْمُ الدِّينِ

और कहेंगे हाएँ अफसोस ये तो क़यामत का दिन है

21

هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ ۖ تُكْذِبُونَ

(जवाब आएगा) ये वही फैसले का दिन है जिसको तुम लोग (दुनिया में) झूठ समझते थे

22

ۖ أَحْشُرُوا ۖ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ

(और फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) जो लोग (दुनिया में) सरकशी करते थे उनको और उनके साथियों को और खुदा को छोड़कर जिनकी परसतिश करते हैं

23

مِنْ دُونِ اللَّهِ فَأَهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ

उनको (सबको) इकट्ठा करो फिर उन्हें जहन्नुम की राह दिखाओ

24

وَقِفُوهُمْ ۚ إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ

और (हाँ ज़रा) उन्हें ठहराओ तो उनसे कुछ पूछना है

25

مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ

(अरे कमबख्तों) अब तुम्हें क्या होगा कि एक दूसरे की मदद नहीं करते

26

بَلْ هُمْ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ

(जवाब क्या देंगे) बल्कि वह तो आज गर्दन झुकाए हुए हैं

27

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ

और एक दूसरे की तरफ मुताबज्जे होकर बाहम पूछताछ करेंगे

28

قَالُوا ۚ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ

(और इन्सान शयातीन से) कहेंगे कि तुम ही तो हमारी दाहिनी तरफ से (हमें बहकाने को) चढ़ आते थे

29

قَالُوا ۚ بَلْ لَمْ تَكُونُوا ۚ مُؤْمِنِينَ

वह जवाब देंगे (हम क्या जानें) तुम तो खुद ईमान लाने वाले न थे

30

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطَانٍ ۚ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طَٰغِينَ

और (साफ़ तो ये है कि) हमारी तुम पर कुछ हुकूमत तो थी नहीं बल्कि तुम खुद सरकश लोग थे

31

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۚ إِنَّا لَذَائِقُونَ

फिर अब तो लोगों पर हमारे परवरदिगार का (अज़ाब का) क़ौल पूरा हो गया कि अब हम सब यक़ीनन अज़ाब का मज़ा चखेंगे

32

فَأَغْوَيْنُكُمْ إِنَّا كُنَّا غُورِينَ

हम खुद गुमराह थे तो तुम को भी गुमराह किया

33

فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ

गरज़ ये लोग सब के सब उस दिन अज़ाब में शरीक होंगे

34

إِنَّا كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ

और हम तो गुनाहगारों के साथ यूँ ही किया करते हैं ये लोग ऐसे (शरीर) थे

35

إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ

कि जब उनसे कहा जाता था कि खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं तो अकड़ा करते थे

36

وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُوا ۚ ءَالِهَتِنَا لِشَاعِرٍ ۚ مَجْنُونٍ ۚ

और ये लोग कहते थे कि क्या एक पागल शायर के लिए हम अपने माबूदों को छोड़ बैठें (अरे कम्बख्तों ये शायर या पागल नहीं)

37

بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ

बल्कि ये तो हक़ बात लेकर आया है और (अगले) पैग़म्बरों की तसदीक़ करता है

38

إِنَّكُمْ لَذَائِقُوا ۚ الْعَذَابِ الْأَلِيمِ

तुम लोग (अगर न मानोगे) तो ज़रूर दर्दनाक अज़ाब का मज़ा चखोगे

39

وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

और तुम्हें तो उसके किये का बदला दिया जाएगा जो (जो दुनिया में) करते रहे

40

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ

मगर खुदा के बरगुजीदा बन्दे

41

أَوْ لَكَ لَهُمْ رِزْقٌ ﴿٤١﴾ مَّغْلُومٌ ﴿٤٢﴾

उनके वास्ते (बेहिश्त में) एक मुकर्रर रोज़ी होगी

42

فَوَكَهٗ ﴿٤٢﴾ وَهُمْ مُكْرَمُونَ

(और वह भी ऐसी वैसी नहीं) हर क्रिस्म के मेवे

43

فِي جَنَّتِ النَّعِيمِ

और वह लोग बड़ी इज्जत से नेअमत के (लदे हुए)

44

عَلَى سُرُرٍ ﴿٤٤﴾ مُتَقَابِلِينَ

बागों में तख्तों पर (चैन से) आमने सामने बैठे होंगे

45

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ ﴿٤٥﴾ مِّنْ مَّعِينٍ ﴿٤٦﴾

उनमें साफ सफेद बुराक़ शराब के जाम का दौर चल रहा होगा

46

بِإِضَاءِ لَذَّةٍ ﴿٤٦﴾ لِلشَّرِيبِينَ

जो पीने वालों को बड़ा मज़ा देगी

47

لَا فِيهَا غَوْلٌ ۚ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ

(और फिर) न उस शराब में खुमार की वजह से) दर्द सर होगा और न वह उस (के पीने) से मतवाले होंगे

48

وَعِنْدَهُمْ قُصِرَتُ الْأَطْرَفِ عَيْنٌ ۚ

और उनके पहलू में (शर्म से) नीची निगाहें करने वाली बड़ी बड़ी आँखों वाली परियाँ होगी

49

كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ ۚ مَّكْنُونٌ ۚ

(उनकी) गोरी-गोरी रंगतों में हल्की सी सुर्खी ऐसी झलकती होगी

50

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ ۚ يَتَسَاءَلُونَ

गोया वह अन्डे हैं जो छिपाए हुए रखे हो

51

قَالَ قَائِلٌ ۚ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۚ

फिर एक दूसरे की तरफ मुताबज्जे पाकर बाहम बातचीत करते करते उनमें से एक कहने वाला बोल उठेगा कि (दुनिया में) मेरा एक दोस्त था

52

يَقُولُ أَأِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ

और (मुझसे) कहा करता था कि क्या तुम भी क़यामत की तसदीक़ करने वालों में हो

53

أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ا وَعِظْمًا ۚ أَعِنَّا لَمَدِينُونَ

(भला जब हम मर जाएँगे) और (सड़ गल कर) मिट्टी और हव्ी (होकर) रह जाएँगे तो क्या हमको दोबारा ज़िन्दा करके हमारे (आमाल का) बदला दिया जाएगा

54

قَالَ هَلْ أُنْتُمْ مُّطَّلَعُونَ

(फिर अपने बेहश्त के साथियों से कहेगा)

55

فَاطَّلَعَ فَرَءَاهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ

तो क्या तुम लोग भी (मेरे साथ उसे झांक कर देखोगे) गरज़ झाँका तो उसे बीच जहन्नुम में (पड़ा हुआ) देखा

56

قَالَ تَاللَّهِ إِنْ كِدْتَ لَتُرْدِينَ

(ये देख कर बेसाख्ता) बोल उठेगा कि खुदा की कसम तुम तो मुझे भी तबाह करने ही को थे

57

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ

और अगर मेरे परवरदिगार का एहसान न होता तो मैं भी (इस वक्त) तेरी तरह जहन्नुम में गिरफ्तार किया गया होता

58

أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ

(अब बताओ) क्या (मैं तुम से न कहता था) कि हम को इस पहली मौत के सिवा फिर मरना नहीं है

59

إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ

और न हम पर (आखेरत) में अज़ाब होगा

60

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

(तो तुम्हें यक़ीन न होता था) ये यक़ीनी बहुत बड़ी कामयाबी है

61

لِمِثْلِ هَذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَمِلُونَ

ऐसी (ही कामयाबी) के वास्ते काम करने वालों को कारगुज़ारी करनी चाहिए

62

أَذَلِكَ خَيْرٌ ۚ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ

भला मेहमानी के वास्ते ये (सामान) बेहतर है या थोहड़ का दरख्त (जो जहन्नुमियों के वास्ते होगा)

63

إِنَّا جَعَلْنَهَا فِتْنَةً ۖ لِلظَّالِمِينَ

जिसे हमने यक्रीनन ज़ालिमों की आजमाइश के लिए बनाया है

64

إِنَّهَا شَجَرَةٌ ۖ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ

ये वह दरख्त हैं जो जहन्नुम की तह में उगता है

65

طَلَعَهَا كَأَنَّهُ ۖ رُءُوسُ الشَّيَاطِينِ

उसके फल ऐसे (बदनुमा) हैं गोया (हू बहू) साँप के फन जिसे छूते दिल डरे

66

فَإِنَّهُمْ لَءَاكِلُونَ مِنْهَا فَمَالُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ

फिर ये (जहन्नुमी लोग) यक्रीनन उसमें से खाएँगे फिर उसी से अपने पेट भरेंगे

67

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا ۖ مِّنْ حَمِيمٍ ۖ

फिर उसके ऊपर से उन को खूब खौलता हुआ पानी (पीप वगैरह में) मिला मिलाकर पीने को दिया जाएगा

68

ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيمِ

फिर (खा पीकर) उनको जहन्नुम की तरफ यक्रीनन लौट जाना होगा

69

إِنَّهُمْ أَلفُوا ۖ ءَابَاءَهُمْ ضَالِّينَ

उन लोगों ने अपन बाप दादा को गुमराह पाया था

70

فَهُمْ عَلَىٰ ءَاثَرِهِمْ يُهْرَعُونَ

ये लोग भी उनके पीछे दौड़े चले जा रहे हैं

71

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ

और उनके क़बल अगलों में से बहुतेरे गुमराह हो चुके

72

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُنْذِرِينَ

उन लोगों के डराने वाले (पैग़म्बरों) को भेजा था

73

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عِقَابُ الْمُنْذَرِينَ

ज़रा देखो तो कि जो लोग डराए जा चुके थे उनका क्या बुरा अन्जाम हुआ

74

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ

मगर (हाँ) खुदा के निरे खरे बन्दे (महफूज़ रहे)

75

وَلَقَدْ نَادَيْنَا نُوحًا ۖ فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ

और नूह ने (अपनी कौम से मायूस होकर) हमें ज़रूर पुकारा था (देखो हम) क्या खूब जवाब देने वाले थे

76

وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ ۖ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ

और हमने उनको और उनके लड़के वालों को बड़ी (सख्त) मुसीबत से नजात दी

77

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ ۖ هُمْ الْبَاقِينَ

और हमने (उनमें वह बरकत दी कि) उनकी औलाद को (दुनिया में) बरकरार रखा

78

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ

और बाद को आने वाले लोगों में उनका अच्छा चर्चा बाक़ी रखा

سَلَّمَ عَلَى نُوحٍ ۙ فِي الْعَلَمِينَ

कि सारी खुदायी में (हर तरफ से) नूह पर सलाम है

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

हम नेकी करने वालों को यूँ जज़ाए खैर अता फरमाते हैं

إِنَّهُ ۙ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ

इसमें शक नहीं कि नूह हमारे (खास) ईमानदार बन्दों से थे

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ

फिर हमने बाक़ी लोगों को डुबो दिया

ۙ وَإِنْ مِنْ شِيعَتِهِ ۙ لَإِبْرَاهِيمَ

और यक़ीनन उन्हीं के तरीक़ो पर चलने वालों में इबराहीम (भी) ज़रूर थे

إِذْ جَاءَ رَبُّهُ ۙ بِقَلْبٍ ۙ سَلِيمٍ

जब वह अपने परवरदिगार (कि इबादत) की तरफ (पहलू में) ऐसा दिल लिए हुए बढ़े जो (हर ऐब से पाक था

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ ۙ مَاذَا تَعْبُدُونَ

जब उन्होंने अपने (मुँह बोले) बाप और अपनी क़ौम से कहा कि तुम लोग किस चीज़ की परसतिश करते हो

أَفَنُكَا ۙ إِلَٰهَةً ۙ دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ

क्या खुदा को छोड़कर दिल से गढ़े हुए माबूदों की तमन्ना रखते हो

87

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ

फिर सारी खुदाई के पालने वाले के साथ तुम्हारा क्या ख्याल है

88

فَنَظَرَ نَظْرَةً ۖ فِي النُّجُومِ

फिर (एक ईद में उन लोगों ने चलने को कहा) तो इबराहीम ने सितारों की तरफ एक नज़र देखा

89

فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ۖ

और कहा कि मैं (अनकरीब) बीमार पड़ने वाला हूँ

90

فَتَوَلَّوْا ۖ عَنْهُ مُدْبِرِينَ

तो वह लोग इबराहीम के पास से पीठ फेर फेर कर हट गए

91

فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهِتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ

(बस) फिर तो इबराहीम चुपके से उनके बुतों की तरफ मुतावज्जे हुए और (तान से) कहा तुम्हारे सामने इतने चढ़ाव रखते हैं

92

مَا لَكُمْ لَا تَنطِقُونَ

आखिर तुम खाते क्यों नहीं (अरे तुम्हें क्या हो गया है)

93

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا ۖ بِالْيَمِينِ

कि तुम बोलते तक नहीं

94

فَأَقْبَلُوا ۖ إِلَيْهِ يَزْفُونَ

फिर तो इबराहीम दाहिने हाथ से मारते हुए उन पर पिल पड़े (और तोड़-फोड़ कर एक बड़े बुत के गले में कुल्हाड़ी डाल दी)

قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ

जब उन लोगों को खबर हुई तो इबराहीम के पास दौड़ते हुए पहुँचे

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ

इबराहीम ने कहा (अफ़सोस) तुम लोग उसकी परसतिश करते हो जिसे तुम लोग खुद तराश कर बनाते हो

قَالُوا أَأَبْنَاؤُا لَهُ؟ بُنَيْنَا فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ

हालाँकि तुमको और जिसको तुम लोग बनाते हो (सबको) खुदा ही ने पैदा किया है (ये सुनकर) वह लोग (आपस में कहने लगे) इसके लिए (भट्टी की सी) एक इमारत बनाओ

فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ

और (उसमें आग सुलगा कर उसी दहकती हुई आग में इसको डाल दो) फिर उन लोगों ने इबराहीम के साथ मक्कारी करनी चाही

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ

तो हमने (आग सर्द गुलज़ार करके) उन्हें नीचा दिखाया और जब (आज़र ने) इबराहीम को निकाल दिया तो बोले मैं अपने परवरदिगार की तरफ जाता हूँ

رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ

वह अनकरीब ही मुझे रूबरा कर देगा (फिर ग़रज की) परवरदिगार मुझे एक नेको कार (फरज़न्द) इनायत फरमा

فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ

तो हमने उनको एक बड़े नरम दिले लड़के (के पैदा होने की) खुशख़बरी दी

102

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يُبْنَىٰ إِنَّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ  
 قَالَ يَآبَتِ أَفْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۚ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ

फिर जब इस्माईल अपने बाप के साथ दौड़ धूप करने लगा तो (एक दफा) इबराहीम ने कहा बेटा खूब मैं (वही के ज़रिये क्या) देखता हूँ कि मैं तो खुद तुम्हें ज़िबाह कर रहा हूँ तो तुम भी ग़ौर करो तुम्हारी इसमें क्या राय है इसमाईल ने कहा अब्बा जान जो आपको हुक्म हुआ है उसको (बे तअम्मुल) कीजिए अगर खुदा ने चाहा तो मुझे आप सब करने वालों में से पाएंगे

103

فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ ۚ لِلْجَبِينِ

फिर जब दोनों ने ये ठान ली और बाप ने बेटे को (ज़िबाह करने के लिए) माथे के बल लिटाया

104

وَنَدَيْنَاهُ أَنِ يَا إِبْرَاهِيمُ

और हमने (आमादा देखकर) आवाज़ दी ऐ इबराहीम

105

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ إِنَّا كَذَّلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

तुमने अपने ख्वाब को सच कर दिखाया अब तुम दोनों को बड़े मरतबे मिलेंगे हम नेकी करने वालों को यूँ जज़ाए ख़ैर देते हैं

106

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ ۚ الْمُبِينُ

इसमें शक नहीं कि ये यक़ीनी बड़ा सख्त और सरीही इम्तिहान था

107

وَفَدَيْنَاهُ بِذَبْحٍ عَظِيمٍ ۚ

और हमने इस्माईल का फ़िदया एक ज़िबाहे अज़ीम (बड़ी कुर्बानी) करार दिया

108

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ

और हमने उनका अच्छा चर्चा बाद को आने वालों में बाक़ी रखा है

سَلَّمَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ

कि (सारी खुदायी में) इबराहीम पर सलाम (ही सलाम) हैं

كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

हम यूँ नेकी करने वालों को जज़ाए खैर देते हैं

إِنَّهُ ۖ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ

बेशक इबराहीम हमारे (खास) ईमानदार बन्दों में थे

وَبَشَّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا ۖ وَمِنَ الصَّالِحِينَ

और हमने इबराहीम को इसहाक़ (के पैदा होने की) खुशख़बरी दी थी

وَبَرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ ۖ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ ۖ وَظَالِمٌ ۖ لِّنَفْسِهِ ۖ مُبِينٌ ۖ

जो एक नेकोसार नबी थे और हमने खुद इबराहीम पर और इसहाक़ पर अपनी बरकत नाज़िल की और इन दोनों की नस्ल में बाज़ तो नेकोकार और बाज़ (नाफरमानी करके) अपनी जान पर सरीही सितम ढाने वाला

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ

और हमने मूसा और हारून पर बहुत से एहसानात किए हैं

وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ

और खुद दोनों को और इनकी क़ौम को बड़ी (सख्त) मुसीबत से नज़ात दी

وَنَصَرْنَاهُمْ فَكَانُوا ۖ هُمُ الْغَالِبِينَ

और (फिरऔन के मुक़ाबले में) हमने उनकी मदद की तो (आख़िर) यही लोग ग़ालिब रहे

117

وَأَتَيْنَهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَبِينَ

और हमने उन दोनों को एक वाज़ेए उलम तालिब किताब (तौरैत) अता की

118

وَهَدَيْنَهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ

और दोनों को सीधी राह की हिदायत फ़रमाई

119

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي آلِ آخِرِينَ

और बाद को आने वालों में उनका ज़िक्र ख़ैर बाक़ी रखा

120

سَلَامٌ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ

कि (हर जगह) मूसा और हारून पर सलाम (ही सलाम) है

121

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

हम नेकी करने वालों को यूँ जज़ाए ख़ैर अता फरमाते हैं

122

إِنَّهُمْ مِّنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ

बेशक ये दोनों हमारे (ख़ालिस ईमानदार बन्दों में से थे)

123

وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ

और इसमें शक नहीं कि इलियास यक़ीनन पैग़म्बरों में से थे

124

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ ۖ أَأَلَا تَتَّقُونَ

जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम लोग (खुदा से) क्यों नहीं डरते

125

أَتَدْعُونَ بَعْلًا؟ وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخُلُقِينَ

क्या तुम लोग बाल (बुत) की परसतिश करते हो और खुदा को छोड़े बैठे हो जो सबसे बेहतर पैदा करने वाला है

126

اللَّهُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأُولِينَ

और (जो) तुम्हारा परवरदिगार और तुम्हारे अगले बाप दादाओं का (भी) परवरदिगार है

127

فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ

तो उसे लोगों ने झुठला दिया तो ये लोग यक्रीनन (जहन्नुम) में गिरफ्तार किए जाएँगे

128

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ

मगर खुदा के निरे खरे बन्दे महफूज़ रहेंगे

129

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ

और हमने उनका ज़िक्र खैर बाद को आने वालों में बाक़ी रखा

130

سَلَامٌ عَلَىٰ آلِ يَاسِينَ

कि (हर तरफ से) आले यासीन पर सलाम (ही सलाम) है

131

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

हम यक्रीनन नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं

132

إِنَّهُ؟ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ

बेशक वह हमारे (खालिस) ईमानदार बन्दों में थे

133

وَإِنَّ لُوطًا ۙ لَّمِنَ الْمُرْسَلِينَ

और इसमें भी शक नहीं कि लूत यक्रीनी पैग़म्बरों में से थे

134

إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ ۙ أَجْمَعِينَ

जब हमने उनको और उनके लड़के वालों सब को नजात दी

135

إِلَّا عَجُوزًا ۙ فِي الْغَابِرِينَ

मगर एक (उनकी) बूढ़ी बीबी जो पीछे रह जाने वालों ही में थीं

136

ثُمَّ دَمَّرْنَا آلَآخَرِينَ

फिर हमने बाक़ी लोगों को तबाह व बर्बाद कर दिया

137

وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُصْبِحِينَ

और ऐ अहले मक्का तुम लोग भी उन पर से (कभी) सुबह को और (कभी) शाम को (आते जाते गुज़रते हो)

138

وَيَالَيْلٍ ۙ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते

139

وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ

और इसमें शक नहीं कि यूनस (भी) पैग़म्बरों में से थे

140

إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ

(वह वक्त याद करो) जब यूनस भाग कर एक भरी हुई कश्ती के पास पहुँचे

141

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ

तो (अहले कशती ने) कुरआ डाला तो (उनका ही नाम निकला) यूनुस ने ज़क उठायी (और दरिया में गिर पड़े)

142

فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌۙ

तो उनको एक मछली निगल गयी और यूनुस खुद (अपनी) मलामत कर रहे थे

143

فَلَوْلَا أَنَّهُۥ ۙ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ

फिर अगर यूनुस (खुदा की) तसबीह (व ज़िक्र) न करते

144

لَلْبَثِ فِي بَطْنِهِۦ ۙ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ

तो रोज़े क़यामत तक मछली के पेट में रहते

145

ۙ فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌۙ

फिर हमने उनको (मछली के पेट से निकाल कर) एक खुले मैदान में डाल दिया

146

وَأَنۡاۙۙۙ بَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةًۙ ۙ مِّنۡ يَّقْطِينٍۙ

और (वह थोड़ी देर में) बीमार निढाल हो गए थे और हमने उन पर साये के लिए एक कढ़ू का दरख्त उगा दिया

147

وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ مِآ۟ةٍۙ ۙ أَلْفٍۙ أَوْ يَزِيدُونَ

और (इसके बाद) हमने एक लाख बल्कि (एक हिसाब से) ज्यादा आदमियों की तरफ (पैग़म्बर बना कर भेजा)

148

فَآمَنُواۙ ۙ فَمَتَّعْنَاهُمۡ إِلَىٰ حِينٍۙ

तो वह लोग (उन पर) ईमान लाए फिर हमने (भी) एक खास वक्त तक उनको चैन से रखा

149

فَاسْتَفْتِهِمُ الرِّبَّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُونَ

तो (ऐ रसूल) उन कुफ़्कार से पूछो कि क्या तुम्हारे परवरदिगार के लिए बेटियाँ हैं और उनके लिए बेटे

150

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنْتِ؟! وَهُمْ شُهُدُونَ

(क्या वाक़ई) हमने फरिश्तों की औरतें बनाया है और ये लोग (उस वक्त) मौजूद थे

151

أَلَا إِنَّهُمْ مِّنْ إِفْكِهِمْ لَيَقُولُونَ

ख़बरदार (याद रखो कि) ये लोग यक़ीनन अपने दिल से गढ़-गढ़ के कहते हैं कि खुदा औलाद वाला है

152

وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ

और ये लोग यक़ीनी झूठे हैं

153

أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ

क्या खुदा ने (अपने लिए) बेटियों को बेटों पर तरज़ीह दी है

154

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ

(अरे कम्बख्तों) तुम्हें क्या जुनून हो गया है तुम लोग (बैठे-बैठे) कैसा फैसला करते हो

155

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ

तो क्या तुम (इतना भी) ग़ौर नहीं करते

156

أَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ ۚ مُّبِينٌ ۚ

या तुम्हारे पास (इसकी) कोई वाज़ेए व रौशन दलील है

157

فَأْتُوا<sup>؟</sup> بِكِتَابِكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

तो अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो तो अपनी किताब पेश करो

158

وَجَعَلُوا<sup>؟</sup> بَيْنَهُ<sup>؟</sup> وَيَيْنَ الْجَنَّةِ نَسَبًا<sup>؟</sup> وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ

और उन लोगों ने खुदा और जिन्नात के दरमियान रिश्ता नाता मुकर्रर किया है हालाँकि जिन्नात बखूबी जानते हैं कि वह लोग यक़ीनी (क़यामत में बन्दों की तरह) हाज़िर किए जाएँगे

159

سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ

ये लोग जो बातें बनाया करते हैं इनसे खुदा पाक साफ़ है

160

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ

मगर खुदा के निरे खरे बन्दे (ऐसा नहीं कहते)

161

فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ

गरज़ तुम लोग खुद और तुम्हारे माबूद

162

مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفِتْنِينَ

उसके खिलाफ (किसी को) बहका नहीं सकते

163

إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ

मगर उसको जो जहन्नुम में झोंका जाने वाला है

164

وَمَا مِنَّا إِلَّا لَهُ<sup>؟</sup> مَقَامٌ<sup>؟</sup> مَّعْلُومٌ<sup>؟</sup>

और फरिश्ते या आइम्मा तो ये कहते हैं कि मैं हर एक का एक दरजा मुकर्रर है

165

وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُّونَ

और हम तो यक़ीनन (उसकी इबादत के लिए) सफ बाँधे खड़े रहते हैं

166

وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ

और हम तो यक़ीनी (उसकी) तस्बीह पढ़ा करते हैं

167

وَإِنْ كَانُوا ۙ لَيَقُولُنَّ

अगरचे ये कुफ़ार (इस्लाम के क़बूल) कहा करते थे

168

لَوْ أَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا ۙ مِنْ الْأَوَّلِينَ

कि अगर हमारे पास भी अगले लोगों का तज़क़िरा (किसी किताबे खुदा में) होता

169

لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ

तो हम भी खुदा के निरे खरे बन्दे ज़रूर हो जाते

170

فَكَفَرُوا ۙ بِهِ ۚ ۙ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ

(मगर जब किताब आयी) तो उन लोगों ने उससे इन्कार किया ख़ैर अनक़रीब (उसका नतीजा) उन्हें मालूम हो जाएगा

171

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ

और अपने खास बन्दों पैग़म्बरों से हमारी बात पक्की हो चुकी है

172

إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ

कि इन लोगों की (हमारी बारगाह से) यक़ीनी मदद की जाएगी

173

وَإِنَّ جُنَدَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ

और हमारा लश्कर तो यक़ीनन ग़ालिब रहेगा

174

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ<sup>❑</sup>

तो (ऐ रसूल) तुम उनसे एक खास वक्त तक मुँह फेरे रहो

175

وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ

और इनको देखते रहो तो ये लोग अनक़रीब ही (अपना नतीजा) देख लेगे

176

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ

तो क्या ये लोग हमारे अज़ाब की जल्दी कर रहे हैं

177

فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ

फिर जब (अज़ाब) उनकी अंगनाई में उतर पड़ेगा तो जो लोग डराए जा चुके हैं उनकी भी क्या बुरी सुबह होगी

178

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ<sup>❑</sup>

और उन लोगों से एक खास वक्त तक मुँह फेरे रहो

179

وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ

और देखते रहो ये लोग तो खुद अनक़रीब ही अपना अन्जाम देख लेंगे

180

سُبْحَنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ

ये लोग जो बातें (खुदा के बारे में) बनाया करते हैं उनसे तुम्हारा परवरदिगार इज्जत का मालिक پاک साफ है

181

وَسَلَّمَ عَلَى الْمُرْسَلِينَ

और पैगम्बरों पर (दुरूद) सलाम हो

182

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

और कुल तारीफ खुदा ही के लिए सज़ावार हैं जो सारे जहाँ का पालने वाला है